

विचार बिन्दु

जिस प्रकार थोड़ी-सी वायु से आग भड़क उठती है, उसी प्रकार थोड़ी-सी मेहनत से किस्मत चमक उठती है। -अज्ञात

नाकामी को छिपाना है, युद्ध तो बहाना है

10 मई, 2026 को प्रधानमंत्रीजी ने सिकंदराबाद में आयोजित सार्वजनिक सभा में अचानक देशवासियों से कई प्रकार की अपीलें कीं। सामान्यतया, अब तक प्रधानमंत्री जी इस प्रकार की गंभीर और महत्वपूर्ण घोषणाएं राष्ट्र के नाम संबोधन के माध्यम से करते रहे हैं। चाहे वह नोटबंदी की घोषणा हो, कोरोना के दौरान अचानक पूरे देश में लॉकडाउन की घोषणा हो अथवा तीनों कृषि कानूनों को वापस लेने की घोषणा हो। ये घोषणाएं देशवासियों से अपील के रूप में थीं। यह अलग बात है कि प्रधानमंत्री द्वारा की गई अपील को सत्ताधारी दल के अनुयायियों द्वारा आदेश के रूप में ही लिया जाता है।

इन अपीलों का प्रमुख उद्देश्य, विदेशी मुद्रा के कम होते भंडार को बचाने के लिए था। इनमें से कुछ इस प्रकार थीं:-

अगले एक वर्ष में विदेश यात्रा कम से कम करें।

निजी वाहनों का उपयोग न्यूनतम करें और वाहनों को पूल बनाकर उपयोग करें। सार्वजनिक परिवहन का अधिकाधिक उपयोग करें। बर्क फ्रॉम होम करें, जैसा कोरोना काल में किया था।

एक वर्ष तक सोना नहीं खरीदें, चाहे कितना ही महत्वपूर्ण सामाजिक और पारिवारिक उत्सव ही क्यों न हो।

खाने के तेल का उपयोग कम करें।

किसान रासायनिक खाद का उपयोग 25 से 50 प्रतिशत तक कम करें।

सामान्य स्थिति में प्रधानमंत्री की अपील का स्वागत किया जाता और इसे कोई भी अन्यथा नहीं लेता। पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने जिस समय देश पर खाद्यान्न का संकट था और देशवासियों से सप्ताह में एक समय का भोजन नहीं करने की अपील की थी, तो सबसे सोमवार को व्रत रखना प्रारंभ किया था। इनमें से कई तो आज तक भी सोमवार का व्रत रखते हैं। उनकी अपील का असर इसलिए अधिक हुआ कि वह स्वयं सादगी युक्त जीवन जीते थे एवं जैसा वह कहते थे, वैसा ही करते थे।

जहां तक प्रधानमंत्री की वर्तमान अपीलों का प्रश्न है उन्होंने इसे पश्चिम एशिया के युद्ध से जोड़कर बताया है। यह समझ से परे है कि अचानक समस्या इतनी गंभीर कैसे हो गई, जबकि युद्ध को प्रारंभ हुए दो महीने से अधिक हो चुके हैं। देशवासी समझ सकते हैं कि पांच राज्यों में चुनाव के कारण प्रधानमंत्री के लिए अपनी आर्थिक नीतियों की असफलता को स्वीकार करना सरल नहीं होता और उनका शायद चुनाव के परिणाम पर भी प्रभाव पड़ सकता था। चुनाव के दौरान, उन्होंने पूरे जोर-शोर से वाहनों के काफिलों के साथ अनेक रैलियां और रोड शो किए। अब लोग यह प्रश्न अवश्य पूछेंगे कि जब युद्ध प्रारंभ हो चुका था तो आपने फिर चुनाव प्रचार के दौरान सादगी क्यों नहीं बरती और इसके लिए ऑनलाइन मोड का क्यों नहीं उपयोग किया?

जब देशवासियों से वर्क फ्रॉम होम करने की अपील की जा रही है तो प्रधानमंत्री भी कम से कम 'वर्क फ्रॉम नेशन' तो कर ही सकते थे। विडंबना यह है कि जैसे ही प्रधानमंत्री ने देशवासियों से विदेश यात्रा न्यूनतम करने की अपील की, उसी के ठीक बाद प्रधानमंत्री स्वयं पांच देशों की यात्रा पर निकल गए। क्या इन देशों के नेताओं से ऑनलाइन वार्ता नहीं हो सकती थी एवं क्या वहां जाना आवश्यक था?

प्रधानमंत्री जी द्वारा ये अपीलें 4 मई 2026 को चुनाव समाप्त होते ही 10 मई को की गईं। देश की आर्थिक स्थिति और विदेशी मुद्रा का भंडार अचानक एक दिन में तो समाप्त नहीं हो गया था। 10 मई की अपीलों को 11 मई को वडोदरा में भी दोहराया गया। देशवासी अच्छी तरह समझते हैं कि प्रधानमंत्री की अपील, आदेश का प्रभाव रखती है, विशेषकर भाजपा के नेताओं के लिए। इसी कारण, दिल्ली की मुख्यमंत्री मेट्रो में चलने लगीं तो महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री मोदरेसाक्षित चलाकर अपने कार्यालय पहुंचे। दिल्ली सरकार ने तो सरकारी कर्मचारियों को सप्ताह में दो दिन घर से ही काम करने के आदेश जारी कर दिए। यहाँ तक की सर्वोच्च न्यायालय ने भी सप्ताह में दो दिन ऑनलाइन सुनवाई करने का निर्णय ले लिया।

पश्चिम एशिया का युद्ध प्रारंभ हुए दो माह हो गए किंतु चुनाव प्रचार के दौरान प्रधानमंत्री, गृहमंत्री एवं उनके नेताओं द्वारा सैकड़ों कारों के काफिले के साथ अनेक रोड शो और रैलियां आयोजित की गईं। इन सब में भाग लेने के लिए हजारों, लाखों लोगों को लाया गया जिनके लिए हजारों वाहनों का उपयोग निश्चित रूप से किया गया था। प्रधानमंत्री जी चुनाव के दौरान, लगभग प्रतिदिन, दिल्ली से पांच राज्यों में से किसी न किसी स्थान पर हवाई जहाज/हेलीकॉप्टर से गए थे, जिनमें बहुत अधिक 'एक्विपन फ्यूल', लगता है। यह भी एक संयोग ही है कि जिस दिन प्रधानमंत्री ने देशवासियों से विदेश यात्रा न करने की अपील की, उसके ठीक एक दिन बाद प्रधानमंत्री स्वयं पांच देशों की विदेश यात्रा पर निकल गए। क्या विदेश यात्रा पर जाने के लिए उनके हवाई जहाज में पेट्रोल के स्थान पर पानी भर जाता है?

कभी-कभी ऐसा लगता है कि सत्ताधारी दल के नेताओं ने देश की जनता को मूर्ख समझ लिया है। उन्हें एक बात अवश्य याद रखनी चाहिए जो किसी विद्वान ने कही थी, "आप सब लोगों को एक बार मूर्ख बना सकते हैं, एक व्यक्ति को कई बार मूर्ख बना सकते हैं, लेकिन सभी लोगों को हर बार मूर्ख नहीं बना सकते"। देशवासी जानते हैं कि देश की आर्थिक स्थिति काफी दिनों से अत्यंत खराब चल रही थी। बेरोजगारी बहुत बढ़ी हुई थी। इस बारे में न केवल विपक्षी दलों के नेताओं अपितु अनेक आर्थिक विशेषज्ञों ने भी कई बार सरकार का ध्यान

आकर्षित किया था। लेकिन सत्ताधारी दल पांच राज्यों के चुनाव होने तक इनको नकारते रहे और जनता को विश्वास दिलाते रहे कि देश बहुत मजबूत स्थिति में है।

यह तो तब है, जब प्रतिदिन रुपए की कीमत घटती जा रही थी। अब तो यह घटकर एक डॉलर के 96 रुपए से अधिक हो गई है। रुपए की गिरती कीमत का लाभ अधिक निर्यात करके उठा सकते थे क्योंकि डॉलर में सौदा होने पर पहले की तुलना में अब अधिक रुपए प्राप्त होते हैं। यह अवसर था कि निर्यात के उत्पादों में वृद्धि की जाती जिससे रोजगार भी बढ़ता। किंतु ऐसा हो नहीं रहा है।

एक बच्चे के विदेश में पढ़ने पर लगभग 50 लाख का व्यय होता है। यह भुगतान विदेशी मुद्रा में ही होता है। इस राशि में 20 लोग विदेश प्रमण कर सकते हैं। क्या प्रधानमंत्री अपने नेताओं और कार्यकर्ताओं से यह अपील करेंगे कि वे अपने बच्चों को विदेश से बुलाकर यहां पढ़ाना प्रारंभ करें, एवं बच्चों को अब विदेश में पढ़ने के लिए नहीं भेजें। इससे विदेशी मुद्रा की बहुत बचत होगी।

प्रधानमंत्री की एक अपील यह है कि लोग खाने के तेल के उपयोग में कमी करें। क्या उन्हें यह नहीं पता है कि देश के 85 करोड़ लोग तो सरकार द्वारा दिए जा रहे मुफ्त राशन पर निर्भर हैं? उनके खाने में तेल, वैसे ही महंगाई के कारण गायब होता जा रहा है। जिनके पास पहले ही तेल खरीदने के लिए पैसे नहीं हों, उनसे तेल की खपत कम करने के लिए कहना एक प्रकार से उनके साथ भ्रष्टाचार ही होगा।

प्रधानमंत्री जी ने इस प्रकार की आर्थिक स्थिति के लिए पश्चिम एशिया के युद्ध को जिम्मेदार ठहराया है। भाजपा के नेता सभी टी वी डिबेट में भारत की उत्कृष्ट विदेश नीति का हवाला देते हुए यह बयान देते नहीं थक रहे थे कि हमारी अच्छी विदेश नीति के कारण भारत पर अन्य देशों जितना प्रभाव नहीं होने दिया गया है। यदि समय समय पर सरकार वास्तविक स्थिति से देशवासियों को अवगत कराती रहती तो देशवासी, प्रधानमंत्री की इस अपील के लिए मानसिक रूप से तैयार रहते।

प्रधानमंत्री जी ने एक वर्ष तक देशवासियों से सोना नहीं खरीदने की अपील की है। यहां के सामान्य परिवारों में भी विवाह के अवसर पर कुछ सोना, जैसे मंगल सूत्र, अपनी पुत्री को देने का रिवाज रहा है। गत लोक सभा चुनाव के दौरान प्रधानमंत्री ने कांग्रेस पर यह आरोप लगाते हुए कहा था कि वह यदि सत्ता में आ गई तो वे महिलाओं का मंगलसूत्र भी छीन लेंगे। अब तो प्रधानमंत्री जी स्वयं, महिलाओं को मंगलसूत्र नहीं खरीदने की सलाह दे रहे हैं।

विदेशी मुद्रा का संकट, इस प्रकार की अपील के पीछे मुख्य कारण रहा है क्योंकि तेल के आयात पर अत्यधिक विदेशी मुद्रा खर्च होती है। यदि भारत, इस युद्ध में अमेरिका, इजरायल द्वारा ईरान पर किए गए हमले एवं उसके सुपीम लीडर और 40 उच्च नेताओं की हत्या करने का एक श्वेत पत्र जारी करना चाहिए, जिस पर संसद में बहस हो, ताकि देशवासी अवगत हो सकें कि किस प्रकार देश की आर्थिक स्थिति धीरे-धीरे खराब होती गई और इसके लिए कौन सी नीतियां जिम्मेदार रही हैं?

देश के लोगों को गलतफहमी में रखकर और गलत जानकारीयां देकर आप चुनाव तो जीत सकते हैं, किंतु अधिक समय तक वास्तविकता से मुंह नहीं मोड़ सकते। यदि सरकार देशवासियों को विश्वास में ले सके, तो वे सरकार के हर निर्णय में पूरी तरह साथ देंगे। संकट से पार पाने के लिए देश का एक जुट रहना अत्यंत आवश्यक है। अन्यथा, लोग यह कहने से बाज नहीं आयेंगे कि अपनी नीतियों की असफलता का ठीकरा सरकार द्वारा पश्चिम एशिया के युद्ध पर फोड़ा जा रहा है।

-अतिथि सम्पादक, राजेन्द्र भागवत (पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

स्ट्रीट्स एज़ ओपन म्यूजियम्स - विरासत का सांस्कृतिक प्रवाह



अब्दुल लतीफ़ उस्ता

प्रगतिशील समाज एक ऐतिहासिक बोध (Historical Consciousness) की धुरी पर घूमते हुए, अपने वर्तमान का विश्लेषण और भविष्य का निर्धारण करता है। प्रतिवर्ष 18 मई को मनाया जाने वाला अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस मानव सभ्यता के क्रमिक विकास, उसकी कलात्मक उपलब्धियों और सांस्कृतिक अस्मिता के संरक्षण के प्रति प्रतिबद्धता का वैश्विक घोषणापत्र है। संग्रहालयों को केवल संस्थान मात्र न मानकर उन्हें ज्ञानमीमांसीय केंद्र (Epistemological Hubs) के रूप में देखा जाता है, जो विस्मृति के विरुद्ध स्मृति के संघर्ष को दर्शाते हैं।

“शिला-अक्षर उद्घोषते, युग-युग का वृत्तांत।

कला निधि अक्षय यहाँ, संस्कृति-बोध नितांत।”

संग्रहालय की अवधारणा वास्तव में मनुष्य की उस आदिम इच्छा से निपजी है जिसमें वह अपने समय को मुद्रा में कैद करना चाहता था। प्राचीन काल के चंडर क्यूम्स (Cabinets of Curiosities) से लेकर आधुनिक काल के अत्याधुनिक डिजिटल गैलरीज तक, संग्रहालयों ने एक लंबी वैचारिक यात्रा तय की है। आज संग्रहालय केवल पुरावशेषों का संचयन स्थल नहीं हैं, बल्कि उन्हें समाज के सांस्कृतिक मूल्यों के रक्षक और सभ्यता के साक्ष्य कहा

जाये तो गलत नहीं होगा।

हालाँकि संग्रहालयों की पारंपरिक अवधारणा प्रायः उन्हें स्थिर संचयन (Static Accumulation) के रूप में देखती रही है, जहाँ पुरावशेषों को उनके मूल परिवेश से पृथक् कर एक नियंत्रित वातावरण में प्रदर्शित किया जाता है। इस प्रक्रिया में वस्तु का भौतिक रूप तो सुरक्षित रहता है, परंतु उसका सांस्कृतिक स्पंदन शांत हो जाता है। आधुनिक कला-विमर्श में इस स्थिर संचयन की धारणा तेजी से बदल रही है और अब हमारे लिए संग्रहालय जीवंत मंच है, जहाँ अतीत और वर्तमान के बीच एक निरंतर द्वंद्वत्मक संवाद (Dialectical Dialogue) स्थापित होता है। ऐतिहासिक कलाकृतियों केवल सौंदर्यपरक वस्तुएँ नहीं हैं, वे अपने समय के सामाजिक-सांस्कृतिक विमर्शों का भौतिक प्रतिलेख (Physical Transcript) हैं। जब हम मथुरा संग्रहालय में प्रदर्शित किसी मौर्यकालीन प्रतिमा, विक्टोरिया अल्बर्ट संग्रहालय में अकबरनामा की चित्रित प्रतियों या श्री गंगा गोल्डन जुबली संग्रहालय, बीकानेर के तैल-चित्रों का सूक्ष्मता से विश्लेषण करते हैं, तो हम उस युग की तकनीकी विशेषज्ञता, दार्शनिक मान्यताओं और राजनीतिक संरचनाओं का ही पाठ कर रहे होते हैं। एक जागरूक नागरिक के लिए संग्रहालय में प्रदर्शित प्रत्येक वस्तु Polysemic होती है, जिसके अनेक अर्थ और सन्दर्भ होते हैं। एक साधारण सा खंडित टैराकोटा भी प्राचीन काल की अर्थव्यवस्था, खान-पान की आदतों और कलात्मक अभिरुचि की व्याख्या कर सकता है। अतः संग्रहालयों का कार्य केवल प्रदर्शन मात्र नहीं, बल्कि अर्थ-निर्माण (Meaning-making) है।

भारतीय संस्कृति और सभ्यता में निरंतरता का भाव है यह मूल्य केवल पांडुलिपियों तक सीमित नहीं है बल्कि जन-जीवन की परंपराओं में भी जीवित है। हमारे लिए विरासत साक्षरता का

अभिप्राय केवल पुरातत्व को समझना नहीं, बल्कि उस सांस्कृतिक प्रवाह को महसूस करना है जो सतत चला आ रहा है। आज के क्षण-प्रतिक्षण बदलते दौर में जब संस्कृति - सभ्यता को जानने की अधिक आवश्यकता है और संग्रहालयों तक हमारी पहुँच प्रायः सीमित रह गई है। इन सन्दर्भों में संग्रहालयों की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। अब संग्रहालयों को चार दिवारी से निकल कर समुदायों में जाना होगा और विरासत को संस्थागत सीमाओं से बाहर लाकर समाज के साझा जीवन का हिस्सा बनाकर उसे संरक्षित करना होगा। राजस्थान के सन्दर्भों में मेरा यह मानना है कि हमारे लिए विरासत के मूर्त (Tangible) और अमूर्त (Intangible) का भेद मिटना आवश्यक है। राजस्थान की कलाएँ विशेषकर लोक-कलाएँ इस मायने में महत्वपूर्ण हैं कि वे मूर्त और अमूर्त का संगम हैं। बिना भोपा-भोपी के गायन (अमूर्त) के, फड़ (मूर्त) केवल एक चित्रित कपड़ा है। इनका सह-अस्तित्व ही हमारी वास्तविक धाती है। कठपुतली नगर के कठपुतली-कारीगर की कला तब तक पूर्ण नहीं है जब तक की भाट समुदाय के कलाकार द्वारा ढोलक की थाप पर कठपुतली कला के गीत न गाए जाएँ। इस दिशा में हमारे मोहल्लों, गलियों और गुवाडों जैसे स्थलों का सांस्कृतिक रूपांतरण कला और विरासत के लोकतंत्रिकरण और उनके संरक्षण की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम हो सकता है। संग्रहालयों को केवल इमारतों तक सीमित करना हमारी विरासत के साथ न्याय नहीं होगा। उदाहरण के लिए बीकानेर की हवेलियों, विशेषकर रामपुरिया हवेलियों, मध्यकालीन और आधुनिक वास्तुकला के समन्वय का प्रतिनिधित्व करती हैं। पास के ही दुलमेरा गाँव का लाल पत्थर, केवल एक निर्माण सामग्री नहीं है, बल्कि यह बीकानेर की तल जलवायु और यहाँ के

निवासियों के साहस का कलात्मक प्रतीक है। मारवाड़ की नगर योजना में गुवाड़, एक ऐसा लोकतांत्रिक स्थान रहा है जहाँ इतिहास, लोक-कथाएँ और समकालीन राजनीति एक साथ घुलती-मिलती हैं। शेखावाटी क्षेत्र के नवलगढ़, मंडावा, फतेहपुर में बनी हवेलियों के कारण यदि इसे दुनिया की सबसे बड़ी खुली कला दीर्घा कहा जाये तो गलत नहीं होगा। इन चित्रों के विषय जहाँ एक ओर पौराणिक कथाएँ हैं, वहीं दूसरी ओर ब्रिटिश काल के प्रभाव हैं रेलगाड़ियाँ, मोटरकार और ग्रामोफोन भी अंकित हैं। यह दर्शाता है कि उस दौर का व्यापारी समाज शैक्षिक परिवर्तनों के प्रति कितना संजय था।

इसी तरह जयपुर का परकोटा, नगर नियोजन का जीता-जागता उदाहरण है, जो चौपड़-मंगली और वास्तु शास्त्र का अजूदा माल है। यहाँ की चौपड़ें, बाजारों की एकरूपता और छतरियों वाले बरामदे एक नयनाभिराम तारतम्य पैदा करते हैं और दर्शाते हैं कि Urban Planning ?? Heritage Conservation ही की नींव है। जयपुर शहर का गुलाबी रंग केवल एक वर्ण नहीं, बल्कि अतिथि-सत्कार और समन्वय का प्रतीक है। यहाँ के बाजार अपने हस्तशिल्पों (ब्लॉक प्रिंटिंग, कुंदन) से वैसे ही जीवंत हैं जैसे अतीत में थे। जैसलमेर का किला विश्व के उन गिने-चुने किलों में से एक है जहाँ आज भी लोग निवास करते हैं।

इसकी पीली नक्काशीदार झरोछे और गलियों साक्षी हैं कि विरासत और निवास साथ-साथ चल सकते हैं। जोधपुर के मेहरांगढ़ की तलहटी में बसे ब्रह्मपुरी में मकान और दूसरे भवन नील (Indigo) के विभिन्न शेड्स से रंगे हैं। यह नीला शहर केवल पर्यटन का विषय नहीं है, बल्कि यह गमी से बचाव की एक वैज्ञानिक तकनीक और सामुदायिक पहचान का परिचायक है। इन नीली गलियों से गुजरना किसी

शहर केवल ईट-पत्थरों के निर्जीव ढांचे नहीं रह जाये, बल्कि वे जीवंत कला दीर्घाओं के रूप में हमारी संस्कृति की निरंतरता के गवाह बनेंगे। अंततः कला एवं विरासत के प्रति यही सामूहिक सजगता ही एक सशक्त, स्वावलंबी और अपनी जड़ों से जुड़े समाज की स्थायी नींव रखेगी।

-अब्दुल लतीफ़ उस्ता, कला एवं विरासत अध्येता

सभ्यता और संस्कृति के साक्षी-संग्रहालय



डॉ. अरुणा व्यास

रविवार को संग्रहालय दिवस था। देशभर के संग्रहालयों को इस दौरान सजाते-सजाते वहाँ पर आम जन को आकर्षित करने का प्रयास किया गया परन्तु संग्रहालय जीवंत कैसे बनें, वहाँ निरंतर लोग कैसे आएँ इस पर कोई खास प्रयास अभी भी कहीं दिखाई नहीं देता है। क्या ही अच्छा हो, संग्रहालयों को जीवंत करते उन्हें संवाद केंद्रों के रूप में विकसित किया जाए।

संग्रहालय प्राचीन वस्तुओं को सहेजने की जगह भर नहीं है, बल्कि मानवीय सभ्यता, कला, विज्ञान और

इतिहास के जीवंत ज्ञान के भंडार होते हैं। संग्रहालयों को ज्ञान से जुड़ी अनौपचारिक पाठशाला कही जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। स्मृति में पढ़ने से जो प्रभावी रूप में दर्ज नहीं होता, वह देखने और अनुभव करने से होता है। इस दृष्टि से संग्रहालयों में रखी वस्तुएँ बिना बोले इतिहास, विज्ञान और संस्कृति का एक तरह से पाठ पढ़ाती हैं। इस पाठ का असर कितनाबों से कहीं गहरा और स्थाई होता है। नई शिक्षा नीति में अनुभव-आलोक से विद्यार्थियों को जोड़े जाने पर जोर दिया गया है। मुझे लगता है, इस ज्ञान में सर्वाधिक सहायक कुछ है तो वह हमारे संग्रहालय हैं। देश के लगभग हर स्थान पर कोई न कोई महत्वपूर्ण संग्रहालय है। इन संग्रहालयों में विद्यार्थियों को यदि ऐतिहासिक वस्तुएँ, वैज्ञानिक मॉडल को अपनी आँखों से देखने के अवसर बढ़ाए जाएँ तो इतिहास और विज्ञान विषय की समझ को कई गुना हम बढ़ा सकते हैं।

एक मोटे अनुमान के अनुसार देश में एक हजार पांच सौ से अधिक संग्रहालय हैं। लगभग हर प्रांत में वहां से जुड़े इतिहास, संस्कृति और कलाओं से जुड़ी पुरा-वस्तुओं को इनमें संग्रहित किया हुआ है। शिक्षा में यदि इनके सुनियोजित उपयोग को सुनिश्चित किया जाए तो न केवल ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत के बारे में बहुत सूक्ष्मता से अध्ययन को प्रोत्साहित किया जा सकता है बल्कि इनसे नई पीढ़ी को अपने विरासत के गौरव से भी स्वतः जोड़ा जा सकता है। देश आजाद होने के कुछ ही समय बाद 1949 में कोलकाता के कला संग्रहालय में राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय (नेशनल गैलरी आफ मॉडर्न आर्ट) की आवश्यकता महसूस की गई और 1954 में फिर इसकी स्थापना नई दिल्ली स्थित जयपुर हाऊस में हुई। आज इस कला संग्रहालय में 18 हजार से अधिक कलाकृतियों का अजूदा संग्रह है और निरंतर इसमें वृद्धि ही हो रही है। बाद में इसकी दो और शाखाएँ भी मुम्बई और बैंगलूरु में खुली। देश के 150 वर्षों की सांस्कृतिक धरोहर को सहेज

यह संग्रहालय भारतीय संस्कृति का आज जीता-जागता उदाहरण है।

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय प्राणण में स्थित भारत कला भवन एशिया का सबसे महत्वपूर्ण भारतीय संग्रहालय है। सुप्रसिद्ध कलाविद् राय कृष्णदास ने भारत कला भवन की स्थापना की और आज इसमें 12 वीं से 20 शती तक के चित्र और मूर्तियों का अजूदा संग्रह है। पर यह विस्मयना ही है कि इसके बाद किसी विश्वविद्यालय में कला संग्रहालय के लिए इस तरह से कभी कोई विचार नहीं हुआ। विश्वविद्यालयों में संग्रहालयों की अल्पता महत्व है। इसलिए कि वहाँ विद्यार्थी सीधे संग्रहालय से जुड़ते हैं।

राजस्थान में रियासतों के एकीकरण से पहले लगभग सभी प्रांतों में राजा-महाराजाओं ने अपने स्तर पर संग्रहालयों की स्थापना की थी। इनमें पुरा वस्तुओं का अनुपम भंडार है। जयपुर का अलबर्ट हॉल संग्रहालय इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि इसमें प्रसिद्ध मिस्त्र की ममी, उत्कृष्ट लघु चित्रकलाएँ, पारंपरिक राजस्थानी आभूषण, प्राचीन हथियार और

सजावटी कलाओं का बहुत महत्वपूर्ण संग्रह है। अलवर और भरतपुर का संग्रहालय गुप्त और कुषाण काल की मूर्तियाँ और मराठा शासकों के इतिहास के जीवंत गवाह हैं। निजी स्तर पर पिलानी का विरला संग्रहालय इस दृष्टि से विशिष्ट है कि इसमें भारत के आधुनिक विकास का वैज्ञानिक चित्रण है। कोयल के खानें, रेल पटरियों के बिछे जाल और प्राचीन मूर्तियों, चित्रों और हथियारों के साथ यहाँ पर वैज्ञानिक उपकरणों का विशेष संग्रह है। निजी स्तर पर जयपुर के जलमहल के पास संजय संग्रहालय में भारतीय ज्ञान परम्परा से जुड़ी विरल विरासत संजोई हुई है।

संग्रहालय हमारी सांस्कृतिक विरासत और इतिहास के ही महत्वपूर्ण स्त्रोत नहीं हैं, यह भारतीय ज्ञान परम्परा के साक्षी हैं। क्या ही अच्छा हो, संग्रहालयों को जीवंत करते उन्हें संवाद केंद्रों के रूप में विकसित किया जाए।

-डॉ. अरुणा व्यास, पर्यावरण एवं संस्कृति अध्येता स्वतंत्र पत्रकार एवं लेखक

बीकानेर में दिन का पारा 45 डिग्री पहुंचा

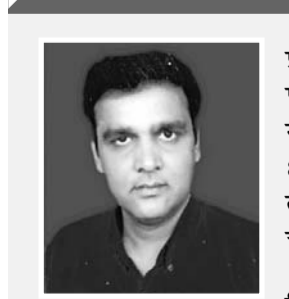
बीकानेर, (निसं)। जिले में भीषण गर्मी का दौर लगातार जारी है। यहां शहर का अधिकतम तापमान 45 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। वहीं रात का तापमान भी बढ़कर 30 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया है, जिससे लोगों को दिन ही नहीं बल्कि रात में भी गर्मी से राहत नहीं मिल पा रही।

मौसम विभाग के अनुसार बीकानेर में अधिकतम तापमान 45 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहने की संभावना है। विभाग की ओर से जारी वेदर मैप में बीकानेर के अधिकांश हिस्सों को रेड जोन में दर्शाया गया है। इसके चलते हीट वेव को लेकर अलर्ट जारी किया गया है। लगातार बढ़ते तापमान के कारण इस बार हीटवेव के दिन भी बढ़ गए हैं। मौसम विशेषज्ञों के अनुसार 25 मई से शुरू होने वाला नौपाना एक जून तक चलेगा। इस दौरान तापमान 45 डिग्री सेल्सियस से भी ऊपर जा सकता है। तेज गर्म हवाओं और तपिश के कारण दोपहर के समय सड़कें सूनी नजर आ रही हैं। लोग

जरूरी काम होने पर ही घरों से बाहर निकल रहे हैं। चिकित्सकों ने भी लोगों को दोपहर में घृष से बचने, पर्याप्त पानी पीने और सावधानी बरतने की सलाह दी है। मौसम विभाग के संकेतों के अनुसार फिलहाल बीकानेर संभाग में गर्मी से राहत मिलने के कोई आसार नजर नहीं आ रहे हैं। आने वाले दिनों में तापमान और बढ़ ने की संभावना जताई जा रही है।

वहीं कालू में भीषण गर्मी का प्रकोप जारी है, जहां तापमान 44 डिग्री सेल्सियस के करीब पहुंच गया है। प्रदेश भर में चल रही गर्म हवाओं और लू के कारण कालू क्षेत्र में जनजीवन प्रभावित हुआ है।

राशिफल मंगलवार 19 मई, 2026



पंडित अनिल शर्मा

कुम्भ, केतु-सिंह
आज राजयोग सूर्योदय से प्रातः 8:48 तक है। यमघट योग प्रातः 8:48 से सूर्योदय तक है। रवियोग प्रातः 8:48 से आरम्भ होगा। आज भद्रा रात्रि 12:43 से आरम्भ होगी। आज अंगारक विनायक चतुर्थी है। आज जिलहजि मु. मास 12 आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:02 से 10:43 तक, लाभ-अमृत 10:43 से 2:04 तक, शुभ 3:44 से 5:25 तक।

राहुकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 5:41, सूर्यास्त 7:05

मेघ
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। आज रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

वृष
आर्थिक कारणों से अटक हुए कार्य बरतने लगेंगे। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता से मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

कर्क
घर-गृहस्थ के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक व्यक्तित्व कार्यों से भागदौड़ और मानसिक तनाव हो सकता है। आज समय अंगिणल कार्यों में खर्च होना।

सिंह
आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बना रहेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

कन्या
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चन दूर होने लगेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बरने लगेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

तुला
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा। अटक हुए कार्य बरतने लगेंगे। व्यावसायिक अड़चनें दूर होने लगेगी। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

वृश्चिक
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बरने कार्यों में वृद्धि सकते हैं।

धनु
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक/सामाजिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मकर
व्यावसायिक विवादों का निपटारा हो सकता है। अटक हुए कार्य बरतने लगेगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। स्वास्थ्य में सुधार होगा।

कुंभ
घर-परिवार में मांगलिक रचनात्मक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
घर-परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।